

NEP 2020 के अंतर्गत शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकरण का विश्लेषण

श्रीमती अनुपमा अम्बरस्ट

सहायक प्राध्यापक,

सी.टी.ई.,

रायपुर, छत्तीसगढ़



<http://www.ujhmds.org/> || Vol. 2 No. 3 (2026): Special August Issue

Date of Submission: 02-07-2026

Date of Acceptance: 22-07-2026

Date of Publication: 17-08-2026

सारांश— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश को एक नीतिगत प्राथमिकता के रूप में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोधपत्र NEP 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षा में एकीकरण की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में उत्तर भारत के पाँच राज्यों के 36 उच्च शिक्षा संस्थानों से 240 शिक्षकों (विभिन्न विषय-क्षेत्रों से) का प्रतिदर्श उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन द्वारा चयनित किया गया। आँकड़ा संग्रहण हेतु एक शोधकर्ता-निर्मित संरचित प्रश्नावली तथा अर्ध-संरचित साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि 72.08% शिक्षक IKS के शिक्षा में एकीकरण को सैद्धांतिक रूप से आवश्यक मानते हैं, किंतु केवल 28.33% शिक्षक ही इसे अपने शिक्षण में व्यावहारिक रूप से सम्मिलित कर पा रहे हैं। मानकीकृत पाठ्यचर्या सामग्री का अभाव, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और IKS की शैक्षणिक वैधता को लेकर संशय प्रमुख बाधाओं के रूप में चिह्नित हुए। अध्ययन अनुशंसा करता है कि IKS एकीकरण हेतु अंतर्विषयक पाठ्यचर्या विकास, शिक्षक क्षमता निर्माण और शोध-आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, पाठ्यचर्या एकीकरण, उच्च शिक्षा, ज्ञान का भारतीयकरण

प्रस्तावना

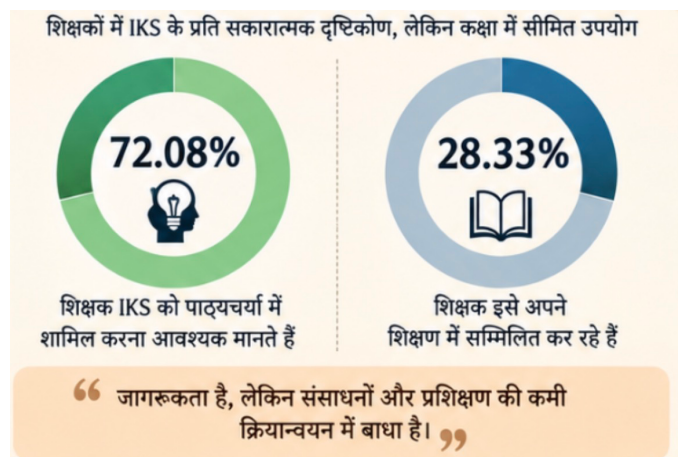
भारत की ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धतम बौद्धिक विरासतों में से एक है। वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, गणित, खगोलविज्ञान, आयुर्वेद,

योग, धातुविज्ञान, भाषाविज्ञान, राजनीतिशास्त्र और कृषि विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में भारतीय विद्वानों ने मौलिक एवं गहन योगदान दिया है। आर्यभट्ट का शून्य एवं दशमलव पद्धति, पाणिनि का अष्टाध्यायी (जिसे आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान में औपचारिक व्याकरण का पूर्ववर्ती माना जाता है), चरक एवं सुश्रुत की चिकित्सा संहिताएँ, तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र — ये सभी एक परिपक्व ज्ञान सभ्यता के प्रमाण हैं। तथापि, औपनिवेशिक काल में स्थापित शिक्षा व्यवस्था ने इस ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम से लगभग पूर्णतः विस्थापित कर दिया और पश्चिमी ज्ञान प्रणाली को एकमात्र प्रामाणिक ज्ञान के रूप में स्थापित किया।

स्वतंत्रता के पश्चात् गठित विभिन्न शिक्षा आयोगों — राधाकृष्णन आयोग (1948), कोठारी आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 — ने भारतीय मूल्यों और संस्कृति के शिक्षा में समावेश की आवश्यकता को स्वीकार किया, किंतु व्यवहार में भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यवस्थित शैक्षणिक एकीकरण नहीं हो सका। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया है। नीति में 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' (Indian Knowledge Systems) शब्द का बारंबार उपयोग किया गया है और यह अनुशंसा की गई है कि IKS को पाठ्यचर्या, शोध और शैक्षणिक विमर्श में समुचित स्थान दिया जाए। इसके अंतर्गत AICTE ने IKS प्रभाग की स्थापना की है और UGC ने स्नातक पाठ्यक्रमों में IKS को एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने के निर्देश दिए हैं।

तथापि, नीतिगत आकांक्षा और व्यावहारिक क्रियान्वयन के मध्य सदैव एक अंतराल विद्यमान रहता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इसी अंतराल को मापना है — अर्थात् यह जानना कि NEP 2020 के IKS संबंधी प्रावधान शिक्षा

संस्थानों में किस सीमा तक क्रियान्वित हो रहे हैं, शिक्षकों की इस विषय में क्या धारणा है, और कौन-सी बाधाएँ इस एकीकरण को अवरुद्ध कर रही हैं।



साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्ञान परंपरा के शैक्षिक महत्व और उसके आधुनिक शिक्षा में समावेश पर विगत कुछ वर्षों में सघन विमर्श हुआ है।

कपिल वात्स्यायन (2002) ने अपने लेखन में भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्रतावादी प्रकृति पर बल दिया। उनका तर्क था कि पश्चिमी ज्ञान प्रणाली जहाँ विषयों को परस्पर पृथक् कोटियों में विभाजित करती है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा अंतर्विषयक है — जैसे संगीत में गणित, वास्तुशास्त्र में ज्योतिष, और आयुर्वेद में दर्शन का समन्वय। यह दृष्टिकोण NEP 2020 की बहुविषयक शिक्षा की अवधारणा से सीधे जुड़ा है।

बाबू (2012) ने भारतीय गणित परंपरा पर विस्तृत शोध करते हुए दर्शाया कि केरल के गणितज्ञों ने न्यूटन-लाइबनिट्ज़ से शताब्दियों पूर्व कलन (calculus) की अवधारणाओं को विकसित किया था, किंतु यह ज्ञान आधुनिक गणित पाठ्यक्रमों में कहीं उल्लेखित नहीं होता। उन्होंने तर्क दिया कि ज्ञान के इतिहास में इस प्रकार की उपेक्षा न केवल अकादमिक अन्याय है, बल्कि विद्यार्थियों को उनकी बौद्धिक विरासत से विच्छिन्न करती है।

शर्मा (2016) ने भारतीय दर्शन के शैक्षिक अनुप्रयोग पर चर्चा करते हुए बताया कि न्याय दर्शन की तर्कपद्धति (logic), सांख्य दर्शन का प्रकृति-विश्लेषण, और बौद्ध दर्शन की प्रतीत्यसमुत्पाद (dependent origination) अवधारणा आधुनिक शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन (critical thinking) विकसित करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। सिंह एवं पांडेय (2018) ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षाशास्त्र

की तुलना करते हुए दर्शाया कि गुरुकुल प्रणाली में व्यक्तिगत अधिगम गति, अनुभवात्मक शिक्षण और समग्र विकास जैसे तत्व विद्यमान थे जो आज भी शैक्षिक रूप से मान्य हैं, और NEP 2020 इन्हीं मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है।

भारत सरकार (2020) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दस्तावेज़ में IKS का उल्लेख अनेक संदर्भों में किया गया है — पाठ्यचर्या में भारतीय भाषाओं और ज्ञान का समावेश, संस्कृत एवं अन्य शास्त्रीय भाषाओं का संवर्धन, तथा IKS पर शोध को बढ़ावा देना। नीति स्पष्ट रूप से कहती है कि IKS को "आधुनिक ज्ञान के पूरक" के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, न कि उसके "विकल्प" के रूप में।

कुमार (2021) ने NEP 2020 के IKS प्रावधानों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए कई चिंताएँ व्यक्त कीं। उनका तर्क था कि IKS के नाम पर यदि केवल अतीत का गौरवगान किया गया और समालोचनात्मक परीक्षण (critical examination) से बचा गया, तो यह शिक्षा के लिए लाभकारी नहीं होगा। उन्होंने सुझाव दिया कि IKS को उसी अकादमिक कठोरता (academic rigour) से पढ़ाया जाना चाहिए जो किसी अन्य विषय के लिए अपेक्षित है। त्रिपाठी (2021) ने AICTE द्वारा IKS प्रभाग की स्थापना और उसके प्रारंभिक कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि AICTE ने IKS पर पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यपुस्तक लेखन, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं और अनुसंधान अनुदान जैसी पहलें आरंभ की हैं।

मिश्रा एवं जोशी (2022) ने आयुर्वेद और योग की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता पर अध्ययन किया और पाया कि जहाँ योग को शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यक्रमों में व्यापक स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है, वहीं आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों का आधुनिक चिकित्सा शिक्षा में एकीकरण अभी प्रारंभिक अवस्था में है। दुबे (2022) ने संस्कृत भाषा और IKS के संबंध पर चर्चा करते हुए तर्क दिया कि IKS के अधिकांश मूल ग्रंथ संस्कृत में होने के कारण संस्कृत शिक्षण का पुनरुत्थान IKS एकीकरण की एक पूर्वापेक्षा है।

गुप्ता एवं रावत (2022) ने IKS शिक्षण में शिक्षकों की तत्परता का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश शिक्षक इस विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, किंतु उनमें IKS की विषयवस्तु और शैक्षणिक विधियों दोनों का ज्ञान अपर्याप्त है। चतुर्वेदी (2023) ने UGC द्वारा स्नातक पाठ्यक्रमों में सम्मिलित IKS प्रश्नपत्र के प्रारंभिक क्रियान्वयन का अध्ययन किया और बताया कि अनेक विश्वविद्यालयों में यह प्रश्नपत्र बिना पर्याप्त तैयारी के लागू किया गया, जिससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तिवारी एवं वर्मा (2023) ने IKS और आधुनिक विज्ञान के संवाद की संभावनाओं पर शोध करते हुए यह दर्शाया कि धातुविज्ञान (लौह स्तंभ की जंग-प्रतिरोधकता), कृषि (वृक्षायुर्वेद), और जल प्रबंधन (बावड़ी प्रणाली) जैसे क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान

का आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन और शिक्षण दोनों संभव और लाभकारी है।

पांडेय (2024) ने NEP 2020 के क्रियान्वयन के तीन वर्षों (2021-2024) की समीक्षा करते हुए बताया कि IKS को लेकर नीतिगत उत्साह यद्यपि उच्च है, किंतु संस्थागत स्तर पर क्रियान्वयन असमान और धीमा रहा है। उन्होंने यह भी चिह्नित किया कि IKS एकीकरण को लेकर दो परस्पर विरोधी दृष्टिकोण विद्यमान हैं — एक जो इसे सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में देखता है, और दूसरा जो इसे वैज्ञानिक शिक्षा के लिए खतरा मानता है — और यह ध्रुवीकरण संतुलित क्रियान्वयन में बाधक है।

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट है कि IKS के शैक्षिक महत्व पर सैद्धांतिक सहमति बढ़ रही है, किंतु इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन, शिक्षक तत्परता और संस्थागत चुनौतियों पर अनुभवजन्य अध्ययनों की कमी है। प्रस्तुत शोध इसी अंतराल को संबोधित करता है।

शोध उद्देश्य

- NEP 2020 के IKS संबंधी प्रावधानों के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
- उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों की IKS एकीकरण के प्रति धारणाओं और तत्परता का अध्ययन करना।
- IKS के पाठ्यचर्या में एकीकरण की प्रमुख बाधाओं की पहचान करना।

शोध प्रविधि

शोध अभिकल्प: प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित शोध विधि अपनाई गई जिसमें मात्रात्मक (प्रश्नावली) और गुणात्मक (साक्षात्कार) दोनों पद्धतियों का संयोजन किया गया।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श: उत्तर भारत के पाँच राज्यों (उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड) के ऐसे उच्च शिक्षा संस्थान जिन्होंने NEP 2020 के अंतर्गत नवीन पाठ्यक्रम संरचना (CBCS/NEP framework) लागू की है, इस शोध की जनसंख्या थे। उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन (purposive sampling) द्वारा 36 संस्थानों (18 विश्वविद्यालय, 12 महाविद्यालय, 6 तकनीकी संस्थान) से कुल 240 शिक्षकों का चयन किया गया। प्रतिदर्श में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य एवं अभियांत्रिकी — सभी विषय-क्षेत्रों से शिक्षक सम्मिलित थे।

उपकरण:

(अ) **IKS एकीकरण धारणा एवं क्रियान्वयन प्रश्नावली:** शोधकर्ता द्वारा विकसित इस प्रश्नावली में 35 कथन सम्मिलित थे जो चार खंडों में विभक्त थे — IKS के प्रति धारणा (10 कथन), वर्तमान क्रियान्वयन स्थिति (8 कथन), कथित बाधाएँ (10 कथन), और सुझाव (7 कथन)। प्रत्येक कथन पंचबिंदु लिंकर्ट मापनी (पूर्णतः असहमत से पूर्णतः सहमत) पर मापा गया। विशेषज्ञ वैधता (4 शिक्षाविदों एवं 3 IKS विशेषज्ञों) एवं क्रोनबैक अल्फा विश्वसनीयता ($\alpha = 0.84$) स्थापित की गई।

(ब) **अर्ध-संरचित साक्षात्कार:** प्रश्नावली डेटा की गहनता एवं व्याख्या हेतु 240 में से 30 शिक्षकों (प्रत्येक विषय-क्षेत्र से 6) के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए गए। साक्षात्कार ऑनलाइन (Zoom/Google Meet) माध्यम से आयोजित किए गए और सहमति से रिकॉर्ड किए गए।

आँकड़ा विश्लेषण: मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण बारंबारता, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन और काई-वर्ग परीक्षण द्वारा किया गया। गुणात्मक आँकड़ों (साक्षात्कार प्रतिलेखन) का विषयगत विश्लेषण किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

तालिका 1: IKS के प्रति शिक्षकों की धारणा (N=240)

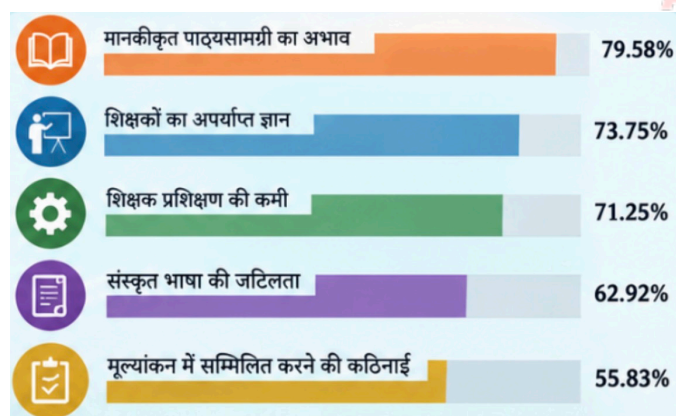
धारणा कथन	सहमत/पूर्णतः सहमत (%)	तटस्थ (%)	असहमत/पूर्णतः असहमत (%)
IKS में शैक्षिक रूप से मूल्यवान ज्ञान विद्यमान है	82.50	10.83	6.67
IKS का आधुनिक पाठ्यचर्या में समावेश आवश्यक है	72.08	15.42	12.50
IKS आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने में सहायक हो सकता है	58.33	22.92	18.75
IKS का अन्य विषयों से अंतर्विषयक जुड़ाव संभव है	67.92	18.33	13.75
वर्तमान में IKS को अपने शिक्षण में सम्मिलित कर रहे हैं	28.33	14.17	57.50

तालिका 1 के परिणाम एक स्पष्ट विरोधाभास को प्रकट करते हैं — जहाँ 82.50% शिक्षक IKS में मूल्यवान ज्ञान की उपस्थिति स्वीकार करते हैं और 72.08% इसके पाठ्यचर्या में समावेश को आवश्यक मानते हैं, वहीं केवल 28.33% शिक्षक इसे व्यावहारिक रूप से अपने शिक्षण में सम्मिलित कर पा रहे हैं। यह धारणा-व्यवहार अंतराल गुप्ता एवं रावत (2022) के निष्कर्षों की पुष्टि करता है। साक्षात्कार में एक विज्ञान शिक्षक ने कहा: "मैं जानता हूँ कि भारतीय गणित परंपरा समृद्ध है, किंतु मुझे स्वयं इसका पर्याप्त ज्ञान नहीं है और न ही कोई मानकीकृत पाठ्यसामग्री उपलब्ध है — तो कक्षा में क्या पढ़ाऊँ?"

IKS से आलोचनात्मक चिंतन विकसित हो सकता है — इस कथन पर सहमति (58.33%) अपेक्षाकृत कम रही, जो शर्मा (2016) के सुझाव की प्रासंगिकता दर्शाता है कि IKS को केवल सूचनात्मक ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि एक विश्लेषणात्मक पद्धति के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

तालिका 2: IKS एकीकरण की प्रमुख बाधाएँ — शिक्षकों की प्रतिक्रिया (N=240)

बाधा	सहमति प्रतिशत
मानकीकृत पाठ्यचर्या सामग्री एवं पाठ्यपुस्तकों का अभाव	79.58
शिक्षकों में IKS विषयवस्तु का अपर्याप्त ज्ञान	73.75
IKS पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभाव	71.25
IKS की शैक्षणिक वैधता एवं प्रमाणिकता पर संशय	47.08
मूल ग्रंथों की भाषा (संस्कृत) की जटिलता	62.92
IKS को धार्मिक शिक्षा समझे जाने की आशंका	44.17
मूल्यांकन प्रणाली में IKS को सम्मिलित करने की कठिनाई	55.83

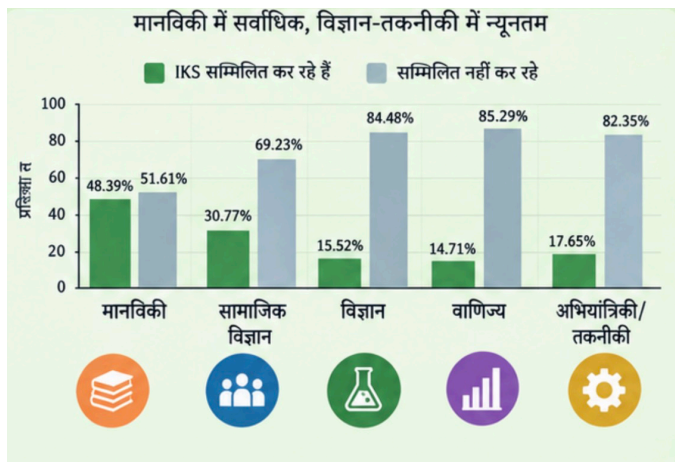


तालिका 2 से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक गंभीर बाधा मानकीकृत पाठ्यसामग्री का अभाव (79.58%) है। यह परिणाम चतुर्वेदी (2023) के निष्कर्ष से पूर्णतः मेल खाता है जिन्होंने UGC के IKS प्रश्नपत्र की अपर्याप्त तैयारी को एक प्रमुख समस्या बताया था। शिक्षक ज्ञान का अभाव (73.75%) और प्रशिक्षण की कमी (71.25%) परस्पर संबद्ध बाधाएँ हैं — वर्तमान शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों (B.Ed., M.Ed.) में IKS कोई स्वतंत्र विषय नहीं है, अतः शिक्षकों को इस क्षेत्र की औपचारिक शिक्षा कभी प्राप्त नहीं हुई।

एक विशेष रूप से उल्लेखनीय बाधा IKS को धार्मिक शिक्षा समझे जाने की आशंका (44.17%) है। साक्षात्कार में कई शिक्षकों ने यह चिंता व्यक्त की कि IKS शिक्षण को धार्मिक प्रचार (religious propagation) के रूप में गलत समझा जा सकता है — विशेषकर धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के संवैधानिक ढाँचे के संदर्भ में। यह चिंता कुमार (2021) द्वारा चिह्नित ध्रुवीकरण को प्रतिबिंबित करती है। वस्तुतः IKS का एक बड़ा भाग — गणित, धातुविज्ञान, भाषाविज्ञान, कृषि, जल प्रबंधन — पूर्णतः लौकिक (secular) ज्ञान है, किंतु इसकी प्रस्तुति इस प्रकार होनी चाहिए जो इस भेद को स्पष्ट करे।

तालिका 3: विषय-क्षेत्र अनुसार IKS एकीकरण की वर्तमान स्थिति (N=240)

विषय-क्षेत्र	n	IKS सम्मिलित कर रहे हैं (%)	सम्मिलित नहीं कर रहे हैं (%)
मानविकी (हिंदी, संस्कृत, इतिहास, दर्शन)	62	48.39	51.61
सामाजिक विज्ञान (राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र)	52	30.77	69.23
विज्ञान (भौतिकी, रसायन, गणित, जीवविज्ञान)	58	15.52	84.48
वाणिज्य (लेखाशास्त्र, प्रबंधन)	34	14.71	85.29
अभियांत्रिकी/तकनीकी	34	17.65	82.35



काई-वर्ग परीक्षण से विषय-क्षेत्र और IKS एकीकरण के मध्य सार्थक संबंध पाया गया ($\chi^2 = 22.74$, $df = 4$, $p < 0.01$)। मानविकी क्षेत्र के शिक्षक (48.39%) अन्य विषय-क्षेत्रों की तुलना में सर्वाधिक IKS सम्मिलित कर रहे हैं, जो स्वाभाविक है क्योंकि संस्कृत, दर्शन और इतिहास जैसे विषय सीधे IKS से जुड़े हैं। विज्ञान (15.52%) और वाणिज्य (14.71%) क्षेत्रों में IKS एकीकरण न्यूनतम है। यह अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि NEP 2020 की मूल भावना यह है कि IKS केवल मानविकी तक सीमित न रहे, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में भी इसका समुचित समावेश हो। तिवारी एवं वर्मा (2023) ने दर्शाया है कि धातुविज्ञान, कृषि और जल-प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में ऐसा एकीकरण संभव है — किंतु इसके लिए अंतर्विषयक पाठ्यसामग्री विकसित करने की आवश्यकता है।

गुणात्मक निष्कर्ष: साक्षात्कारों के विषयगत विश्लेषण से तीन प्रमुख विषयवस्तुएँ (themes) उभरीं। प्रथम, 'उत्साह बनाम अक्षमता' — अधिकांश शिक्षकों ने IKS के प्रति व्यक्तिगत रुचि और सम्मान व्यक्त किया, किंतु स्वयं को इसे शिक्षण में प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने में असमर्थ पाया। द्वितीय, 'अतीत का गौरव बनाम वर्तमान की प्रासंगिकता' — शिक्षकों ने यह संशय व्यक्त किया कि IKS को केवल ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में पढ़ाया जाए या इसकी वर्तमान वैज्ञानिक प्रासंगिकता भी सिद्ध की जाए — और बाद वाले हेतु शोध-आधारित सामग्री का अभाव गंभीर बाधा है। तृतीय, 'संस्थागत दबाव बनाम शैक्षिक स्वतंत्रता' — कुछ शिक्षकों ने यह अनुभव साझा किया कि IKS का समावेश एक प्रशासनिक आदेश के रूप में आया, न कि शैक्षिक संवाद के माध्यम से, जिसके कारण इसे शिक्षक स्वायत्तता पर आक्रमण के रूप में देखा गया।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि NEP 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षा में एकीकरण हेतु एक महत्वपूर्ण नीतिगत आधार प्रदान किया है और शिक्षक समुदाय में इसके प्रति सैद्धांतिक सहमति भी व्यापक है।

तथापि, व्यावहारिक क्रियान्वयन में गंभीर अंतराल विद्यमान है — केवल एक-चौथाई से कुछ अधिक शिक्षक ही IKS को अपने शिक्षण में सम्मिलित कर पा रहे हैं। यह अंतराल प्रमुखतः तीन कारणों से है: मानकीकृत पाठ्यसामग्री की अनुपस्थिति, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, और IKS की प्रस्तुति को लेकर वैचारिक अस्पष्टता। विषय-क्षेत्रों में असमान एकीकरण — मानविकी में अपेक्षाकृत अधिक और विज्ञान-वाणिज्य-तकनीकी में लगभग नगण्य — NEP की बहुविषयक दृष्टि के विपरीत है।

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित अनुशंसाएँ प्रस्तुत हैं:

अंतर्विषयक पाठ्यचर्या विकास हेतु IKS विशेषज्ञों, विषय-विशेषज्ञों और शिक्षाशास्त्रियों की संयुक्त समितियाँ गठित की जानी चाहिए जो प्रत्येक विषय-क्षेत्र के लिए ऐसी पाठ्यसामग्री विकसित करें जो प्रामाणिक, शोध-आधारित और शैक्षणिक रूप से सुदृढ़ हो। बाबू (2012) द्वारा भारतीय गणित पर किया गया कार्य इस दिशा में एक आदर्श उदाहरण है।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों (B.Ed., M.Ed.) तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण में IKS पर एक अनिवार्य मॉड्यूल सम्मिलित किया जाना चाहिए। यह मॉड्यूल केवल सूचनात्मक न होकर शैक्षणिक विधियों (pedagogical approaches) पर भी केंद्रित हो — अर्थात् शिक्षकों को यह सिखाया जाए कि IKS को कक्षा में किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए।

IKS के शिक्षण में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए — जो न तो अनालोचनात्मक गौरवगान हो और न ही आधुनिकता के नाम पर उपेक्षा। कुमार (2021) की अनुशंसा के अनुरूप, IKS को उसी शैक्षिक कठोरता से पढ़ाया जाना चाहिए जो किसी अन्य विषय के लिए अपेक्षित है — उसकी उपलब्धियों को मान्यता देते हुए उसकी सीमाओं को भी ईमानदारी से स्वीकार करते हुए।



IKS की वर्तमान प्रासंगिकता सिद्ध करने हेतु शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में IKS शोध केंद्रों की स्थापना और अंतर्विषयक शोध परियोजनाओं को अनुदान प्रदान किया जाना चाहिए।

शोध की सीमाएँ: यह अध्ययन केवल उत्तर भारत के पाँच राज्यों तक सीमित है और दक्षिण, पूर्व तथा पूर्वोत्तर भारत के संस्थान इसमें सम्मिलित नहीं हैं, जहाँ IKS एकीकरण की स्थिति भिन्न हो सकती है। प्रतिदर्श में केवल शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है — विद्यार्थियों, प्रशासकों और नीति-निर्माताओं के दृष्टिकोण पर पृथक अध्ययन की आवश्यकता है। भावी शोधकर्ताओं को बृहत्तर प्रतिदर्श, विविध भौगोलिक क्षेत्रों और प्रायोगिक अभिकल्प (IKS हस्तक्षेप कार्यक्रमों के प्रभाव मापन) का उपयोग करने की अनुशंसा की जाती है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, एस. (2021). NEP 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली: एक आलोचनात्मक विश्लेषण. *समकालीन शिक्षा*, 18(2), 34–51.
2. गुप्ता, ए. एवं रावत, पी. (2022). भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षण में शिक्षक तत्परता: एक अध्ययन. *शिक्षा शोध पत्रिका*, 44(1), 78–94.
3. चतुर्वेदी, आर. (2023). UGC की IKS पाठ्यक्रम संरचना का प्रारंभिक क्रियान्वयन: समस्याएँ एवं संभावनाएँ. *यूनिवर्सिटी न्यूज़*, 61(22), 15–23.
4. तिवारी, एम. एवं वर्मा, एस. (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान: संवाद की संभावनाएँ. *विज्ञान प्रगति*, 71(3), 18–27.
5. त्रिपाठी, डी. (2021). AICTE का IKS प्रभाग: संरचना, उद्देश्य और प्रारंभिक पहलें. *तकनीकी शिक्षा जर्नल*, 14(2), 45–58.
6. दुबे, पी. (2022). संस्कृत भाषा और भारतीय ज्ञान प्रणाली: एक अन्योन्याश्रित संबंध. *संस्कृत विमर्श*, 8(1), 33–47.
7. पांडेय, वी. (2024). NEP 2020 क्रियान्वयन के तीन वर्ष: IKS एकीकरण की समीक्षा. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 21(1), 12–30.
8. बाबू, सी.टी. रमन (2012). *Indian Mathematics: Engaging with the World from Ancient to Modern Times*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली.
9. भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली.
10. मिश्रा, ए. एवं जोशी, के. (2022). आयुर्वेद एवं योग की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता. *भारतीय चिकित्सा इतिहास पत्रिका*, 17(1), 56–72.
11. वात्स्यायन, कपिल (2002). *Concepts of Space: Ancient and Modern*. अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
12. शर्मा, आर. (2016). भारतीय दर्शन का शैक्षिक अनुप्रयोग: आलोचनात्मक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में. *दार्शनिक अन्वेषण*, 22(1), 89–105.
13. सिंह, बी. एवं पांडेय, एस. (2018). गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षाशास्त्र: एक तुलनात्मक अध्ययन. *प्राचीन भारतीय शिक्षा*, 5(2), 12–28.